आज कि मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:30-08-2014

सारी सृष्टि चक्र का ज्ञान देकर हमें स्वदर्शन चक्रधारी बनाने वाले ज्ञान सागर बाप ने आज फिर से हम बच्चों को स्वदर्शन चक्रधारी बनने कि सिख देते हुए कहा, तुम्हें शांतिधाम और सुखधाम दोनों को याद करना पड़े.

हम ब्राह्मणों का लक्ष्य हैं इस ईश्वरीय ज्ञान को धारण कर स्वर्ग में ऊँच, लक्ष्मी-नारायण जैसा देवी-देवता बनना. इसके लिए दो मुख्य बातें हैं, एक है पतित-पावन बाप को शांतिधाम में याद करना जिसे की हम आत्माये वापस संपूर्ण सतोप्रधान-पावन आत्माये बन जाये और दूसरा हैं देवी-गुणों को धारण करना जिसे हमारी आत्मा के संस्कार देवी-देवताओं जैसे बन जाये. लेकिन हमारी आत्मा देवी-गुणों को धारण करने का पुरुषार्थ तब करेंगी जब उसे मालूम हो कि मुझे सतयुग में लक्ष्मी-नारायण जैसा बनना है (लक्ष्य हो तो लक्षण भी आते जायेंगे) इसलिए बाबा हमें शांतिधाम के साथ-साथ सुखधाम को भी याद करने को कहते है.

आज मुरली में, बाबा ने जितनी बार हमें अलग-अलग तरीक़े से आत्मा का स्वदर्शन चक्र घुमाना सिखलाया उसे ही फिर से रिपिट करेंगे तो हमारी प्रैक्टिस होती जायेगी.

- रुहानी बाप बच्चों से पूछते हैं अब तुम्हें अपने घर (शांतिधाम) जाना है तो घर को याद करना है. लेकिन क्या घर में जाकर बैठ जाना है? विष्णु को स्वदर्शन चक्र दिखाते हैं ना. उनका अर्थ भी बाप अब समझाते है. स्व अर्थात आत्मा को दर्शन हुआ, ८४ जन्मो के चक्र का. तो वह चक्र भी फिराना पड़े. तुम जानते हो हम ८४ का चक्र लगाकर घर जायेंगे. फिर वहॉ से आयेंगे सतयुग में पार्ट बजाने. फिर ८४ का चक्र लगायेंगे. तो यह जो विष्णु को चक्र दिया है, यह चक्र है तुम्हारा. तो यहॉ जब बैठते हो तो सिर्फ शांति में नहीं बैठना है. वर्सा भी याद करना है इसलिए यह चक्र है.

- बाप कहते हैं तुम लाइट हाउस भी हो, बोलता चालता लाइट हाउस हो. एक आंख में है शांतिधाम और दूसरी आंख में है सुखधाम. दोनों को याद करना पड़ता है. घर को याद करने से घर में चले जायेंगे फिर चक्र को भी याद करना है.

- बाप कहते हैं यह सारे चक्र की नॉलेज तुमको ही है. ८४ का चक्र लगाया है. अब यह अन्तिम जन्म है मृत्युलोक में. नई दुनिया को कहा जाता है अमरलोक. यहॉ तो बैठे-बैठे अचानक मृत्यु हो जाती है, वहॉ मरने का डर नहीं क्योंकि अमरलोक है. वहॉ तुम बुढे होते हो तो भी ज्ञान है हम गर्भमहल में जाकर प्रवेश करेंगे. अभी जाते है गर्भ जेल में. वहॉ तो गर्भ महल होता है.

- बाप कहते है यह है पाप-आत्माओं कि दुनिया. यहॉ तो आत्मा को दुख ही मिलता है. वह है पुण्य आत्माओं कि दुनिया. वहॉ दुख का नाम-निशान नहीं. तो एक आंख में शांतिधाम और दूसरी आंख में सुखधाम रखो.

- बाप कहते है भले तुम जन्म-जन्मांतर जप-तप आदि करते आये हो परन्तु वह ज्ञान तो नहीं है ना. वह है भक्ति मार्ग. यहॉ यह है ज्ञान मार्ग. यहॉ अकसर करके साक्षात्कार होता है ब्रह्मा का, फिर श्रीकृष्ण का होगा. कहेंगे इस ब्रह्मा के पास जाओ तो तुम कृष्णपुरी वा वैकुण्ठ में चले जायेंगे. लेकिन ऐसा नहीं समझना कि साक्षात्कार हुआ माना सद्गति हो गई. साक्षात्कार तो सिर्फ इशारा दिलाने के लिए होता है, यहां जाओ. अब तुम यहॉ आ गये हो तो वहॉ (सतयुग में) जाने के लिए पुरुषार्थ करना है.

- बाप ने तुम्हें इस विष्णु के अलंकारों का राज भी समझाया है. असूल में यह अलंकार तो तुम ब्राह्मणों के है, परन्तु तुम स्थाई नहीं रहते हो इसलिए देवताओं को दिखाते है. मुख से जब तुम ज्ञान सुनाते हो तो जैसे शंख ध्वनि करते हो. तुम ब्राह्मण ही अभी कमल फूल समान पवित्र जीवन जीते हो. और यह गदा है ५ विकारों रूपी माया को जीतने की. देखो तुम स्वयं को यह अलंकारों से कैसे सजे-सजायें दिखते हो.

- बाप कहते है घर गृहस्थ में रहते बुद्धि में यह हो कि अब हमको जाना है सुखधाम वाया शांतिधाम. यह हमारा बहुत जन्मो के अन्त का जन्म है. ८४ जन्म पूरे हुए. सूर्यवंशी से चन्द्रवंशी फिर वैश्य, शूद्र वंशी बनें...अब हम बने है ब्राह्मण चोटी. फिर ब्राह्मण से देवता बनेंगे.- यहॉ बैठे है जैसे कि ८४ की बाजोली खेलते है. आगे तीर्थों पर जाते थे तो भी ऐसे

बाजोली करते निशान डालते जाते थे. अभी तुम्हारा तो सच्चा तीर्थ है - शांतिधाम और सुखधाम.

- बाप कहते हैं मैं ५ हजार वर्ष बाद आता हूँ, तुम बच्चों को वर्सा देने. तुम जानते हो हम आये हैं हेल्थ, वेल्थ, हैपीनेस का वर्सा लेने. सतयुग में अथाह धन मिलता है. तुम २१ पीढ़ी देवता बनते हो. वहॉ बुढ़ापे बिगर कभी कोई मरेगा नहीं. यहॉ तो बैठे-बैठे अचानक मर पड़ते हैं. गर्भ में अन्दर भी मर पड़ते हैं. वहॉ तो दुख का नाम नहीं होता. यह है दुखधाम रावण राज्य, उसको कहा जाता है सुखधाम, राम-राज्य. तो याद रहे अब हमें जाना है रावण-राज्य से निकल राम-राज्य में.

ॐ शांति.

Please provide your feedback to Atma bhai on email:
a.brahmin.soul@gmail.com .